जीवन-बाग को खुशबुदार बनाए

-ब्र.कु.गंगाधर

सकारात्मक दृष्टि से विचार करें तो जीवन एक 'बगीचा' है। बगीचे में वृक्ष भी हो सकते हैं और महकते हुए फूल के पौधे भी। गुलाब के साथ कांटे भी होते हैं और बिन जरूरी घास भी। महकते फूलों के साथ-साथ धतूरा जैसे गंधहीन फूल भी हो सकते हैं।

विशाल अर्थ में जीवन-बाग देखें तो अपना उत्तरदायित्व सिर्फ 'मालिक' के रूप में नहीं लेकिन 'माली' के रूप से भी है। जीवन को फूलों का बगीचा बनाना है तो सुंदर फूल खिलें, स्वस्थ रहे उसके लिए पौधें की संभाल रखनी होगी। उनकी संभाल के लिए उसको चाहिए उतना खाद्य पाणी, प्रकाश मीले उसका भी ख्याल रखना होगा। वेस्ट घास को निकालकर क्यारी को साफ-स्वच्छ रखना होगा। पौधे को या वृक्ष को दीमक न लगे उसके लिए कीटनाशक दवा द्वारा जमीन को साफ-स्वच्छ रखना पड़ेगा। आंधी-तूफान बे-मौसम बारिश के झपटे आदि से फूल-पौधे-वृक्ष को नुकसान न हो उनकी संभाल रखनी पड़ेंगी। यह तब ही संभव होगा जब माली जागृत होगा, कर्त्तव्यशील होगा, पुण्य प्रेमी होगा, फल-फूल तथा वृक्ष को पृष्ट बनाने के लिए संकल्पबद्ध होगा। बगीचे में सड़न कादव-कीचड़ द्वारा दूर्गंध न फैले उनका ध्यान रखना यह भी उतना ही महत्व का है।

क्या जीवन-बाग के सम्बन्धों में यह सब बातों का ख्याल हम रखते हैं? जीवन-बाग में अपना अभीगम 'माली' तरीके का नहीं लेकिन 'मालिक' के रूप का है। इसलिए जीवन के साथ का अपना व्यवहार स्वच्छंद है। मालिक होने के अहंम् में जीवन को उत्कृष्ट बनाये नहीं रख सकते। परिणाम रूप में 'माली' भी कर्त्तव्यशीलता के बदले मालिकपन के अहंकार मनुष्य के जीवन में संचालक परिबल बन जाता है। बाग के रक्षणार्थ पशु-प्राणी नष्ट-भ्रष्ट न कर दें उनके लिए बाड़ व कोट बनाने ही पड़ता है। जिंदगी के बगीचें को उज्ज़ाड देने वाले हिंसक पशु है काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, जैसे दूर्गुण। सद्गुण जीवन में महक फैलाते हैं और तमोगुण व्यक्ति की विवेक दृष्टि नष्ट कर देता है और साथ ही सद्गुणों के विकास में विघ्न उत्पन्न करता है।

जीवन-बाग की रक्षा के लिए संयम की बात करना ही पड़ता है। जिससे बगीचा सुरक्षित रह सके। जिंदगी के बगीचे को दीमक न लगे उसके लिए दूर्गुणों रूपी कीटाणुओं का नाश करने हेतु सदाचार की दवा का छिड़काव करना होगा। जीवन बाग में फूल-वृक्ष धूप में कमजोर न हो जाये उसके लिए भी संरक्षण का प्रबंध करना ही चाहिए। और यह संरक्षणात्मक प्रबंध है जीवन प्रति संवेदनशील भावनात्मक अभीगम। बगीचे की धरा को उत्कृष्ट बनाने के लिए खाद्य जरूर चाहिए। जीवन के बगीचे में प्रेम-दया, करूणा, सद्भाव, समदृष्टि जैसे उदान्त जीवन मूल्यों रूपी खाद्य बनाये रखना होगा। खाद्य के साथ पानी की भी उतना ही आवश्यकता है और ये पानी है शुभ और शिव संकल्प। ये दोनों है तो मस्तिष्क 'भवदीय' अर्थात् पावन बन जाता है। बगीचे में पौधा-फूल को प्रकाश न मिले तो उनका विकास में अवरोध पैदा होता ही है। जीवन बाग में भी स्वार्थ, प्रपंच, द्वेष आदि अंधकार से मूक्त रख त्याग, समर्पण और सद्परिवर्तन के प्रकाश से महकते हुए रखना चाहिए।

हमें अपना जीवन परम शक्ति ने सौंपा है। जैसे माली बगीचे की संभाल रखता है। ऐसे ही हमें भी जीवन रूपी बगीचे की संभाल करनी है। इसलिए व्यक्ति को जीवन प्रति विनम्र दृष्टिकोण बनाकर जीवन के 'मालिक' नहीं लेकिन सेवक बनने का प्रयत्न करना चाहिए। जीवन रूपी बगीचे को उजाड़ देने का काम भी मनुष्य कर सकता है और महकाने का काम भी। जीवन-बाग को उजाड़ने के लिए क्षणिक आवेश की जरूरत होती और महकाने के लिए निरंतर साधना, चिंतन और कर्तव्य प्रयाणता। फूल में महक अपने-आप प्रगट नहीं होती, धरती कितनी पीड़ा सहन करती है तब उनकी कोख से पौधा द्वारा फूल का जन्म होता है। चारित्र व्यक्ति का सबसे कीमती और खुशबूदार फूल है। जीवन-बाग में भी चारित्र का फूल खिलता रहे और उनकी महक अत्र-तत्र-सर्वत्र फैलती रहे यही व्यक्ति की सिद्धी है। फूल कभी भी ये विचार नहीं करता की कौन उसे तोड़ने आता है। और उनके साथ कैसा व्यवहार रखना चाहिए। व्यक्ति को देखें बिना खुशबु की सेवा करना यह फूल ने स्वीकार किया हुआ अस्तित्व धर्म है। मानव को भी उनके पास आने वालों की आवश्यकता समझ उसे सम्मान देने की प्रवृत्ति करनी चाहिए। बगीचे के फूल में न होता द्वेष या न होती संकीर्णता। मनुष्य को भी फूलों के पास से ऐसा संदेश आत्मसात कर जीवन को संकीर्णता के छोटे से तलाब बनने के बजाए बहता हुआ झरना बनना चाहिए। क्योंकि जहां विस्तार है वहां विकास है, वही संवेदना है और वहां ही जीवन है।

सद्गुण साधना की उपज है, जबकि दूर्गुण तो किसी प्रयास बिना भी विकसीत होता रहता है। बबूल बड़ा करने के लिए मेहनत नहीं करनी पड़ती, मेहनत को करनी पड़ती है गुलाबोधान निमार्ण के लिए। जीवन में दुर्गुणों को खत्म करने के लिए निरंतर आत्मशुद्धि के लिए मेहनत करनी चाहिए। आत्म-शुद्धि द्वारा ही सदाचार स्फूरित होता है। सामान्य मानव और महान् मानव में यही अंतर है कि महापुरुष, सदाचार का विचार करते हैं, जबकि तुच्छ मानव केवल सुख का, महापुरुष सत्य ज्ञान का विचार करते हैं, जबकि क्षुद्र मानव लोभ का।

अनुभव की शक्ति आगे बढ़ाती है

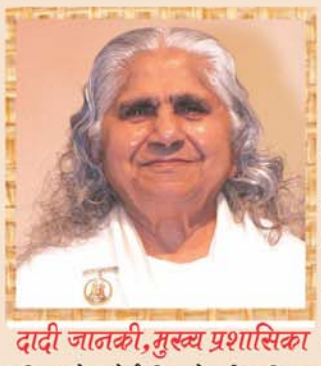

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

हम भाग्यशाली हैं जो भगवान ने बच्चा बना सब बातों को समझने की बुद्धि दी है। हम लक्की हैं कि भगवान की बात समझने की बुद्धि है। जो बुद्धि पहले हमारे पास नहीं थी, दुनिया में कोई कितने भी बुद्धिवान हो, कितने भी साधू साधना करने वाले हो, बाबा कहते हैं वह भले कितना भी घर-बार से वैराग्य रख करके ब्रह्म-तत्व को ही याद करेंगे। वह समझते हैं यही याद है परन्तु हमको बाबा ने कितना सब समझा दिया है - बच्चे, याद किसको कहा जाता है।

हम आत्मा ही पतित बने हैं, सो हम आत्मा को ही पावन बनना है। अभी ब्राह्मण सो फरिश्ता बनना है फिर घर जाना है फिर सुखधाम में आना है। तो पहले शुद्ध पवित्र ब्राह्मण आत्मा बनकर फिर फरिश्ता बनना है। अव्यक्त बापदादा ने इस बार सेकण्ड में साइलेंस में जाने की प्रैक्टिस कराई लेकिन रिजल्ट हरेक अपनी देखें इस ड्रिल का इतना फायदा लिया है? हमें अपने अंदर झांकना चाहिए कि अपनी स्थिति कहां तक बनाई है। सेवायें की, लोगों के कानों तक आवाज पहुंचा, वह तो अच्छा हुआ संदेश मिला इसमें हम खुश तो नहीं हुए। वह तो बाबा का काम है, बिछड़ी हुई आत्माओं को किसी न किसी तरीके से समीप लाना। लेकिन आत्मा अपने अंतरात्मा की आवाज को सुनें और अपने आपसे पूछे हम सेकण्ड में समेटकर उपराम वृत्ति में स्थित हो सकते हैं? सेवा के साथ-साथ हमारी वृत्तियां भी इतनी शुद्ध बनी हैं। हमारे संकल्प ऐसे शुद्ध, शुभ और श्रेष्ठ हों जो दूसरे के संकल्पों को भी शुद्ध, शांत बनने की मदद करें। यह हमारी जो पर्सनल सेवा है, जो दिन रात की सेवा है, श्वांसों-श्वांसों हर समय की जो सेवा है उसकी प्रोग्रेस कहां तक हुई? सफलता में बल चाहिए, हिम्मत और विश्वास चाहिए। सच्ची रियलाइजेशन चाहिए। ऐसे भी नहीं कि चोट खाई रियलाइजेशन हुई फिर हम अलबेले मस्त हो जाएं, ऐसा महसूस करने से समाप्त नहीं होगा। क्योंकि अंदर संस्कारों में जब तक पूरी सच्चाई और स्वच्छता नहीं आयी है, कोने में रहा हुआ किचड़ा भी है तो सम्पूर्ण पावन बनने की शक्ति नहीं होगी क्योंकि ज्ञान बहुत शक्ति देता है तो अगर वह शक्ति जो ज्ञानामृत पीने की है, वह नहीं है तो पावन कैसे बन सकेंगे? जब तक सच्चा अनुभव नहीं है सिर्फ सुनने तक अच्छा है क्योंकि और सब व्यर्थ सुनने से छूट गये यह तो बहुत अच्छा है। एक सच्चे बाप की बातें सुनना, स्व-चिंतन में रहने के लिए यह कितना अच्छा मार्ग मिला है। लोग क्या कहते हैं, लोग क्या करते हैं, उसमें न जाने की इच्छा है, न सुनने की इच्छा है। न उन द्वारा ऐसा सुनने और सुनाने के लिए हम पुरुषार्थ करें, इस तरह से सुनाने का जो प्रभाव पड़े वह भी इच्छा नहीं। इच्छा यही है जो बाप के दिल के बोल हैं वह अनुभव में आ जाएं। जैसे ब्रह्मा बाबा के चेहरे से दिखाई देते हैं। बाबा के रूम में जाते हैं तो कितना अच्छा अनुभव होता है। तो अभी भी बाबा को समाने रख करके सुनो तो वह अनुभव होगा। बुद्धि में और कोई सामने आयेगा तो अनुभव नहीं होगा। सुनते नींद आयेगी, सुनेंगे परन्तु मजा नहीं आयेगा। और बाबा सामने आयेगा तो अनुभव होगा। वह अनुभव की शक्ति हमको ऊंचा उठाती है, नीचे खींचने वाली बातों से हटाती है क्योंकि नीचे खींचने वाली हजार बातें हैं, बड़े अच्छे-अच्छे रूपों से आती है जो ऊपर उठने ही नहीं देती है।

अगर रूहानियत में रहने का, सच्चा बनने का ध्यान अब नहीं रखेंगे तो कब रखेंगे? तो सच्चाई को समझना माना सच्चा बनना। जो बाबा को भी लगे कि यह मेरा सच्चा बच्चा है, इसकी याद सच्ची है। औरों को भी फीलिंग आए - इसकी याद अंदर की है, सच्ची है। यह सच्चाई का सर्टीफिकेट जब तक नहीं मिला है तब तक हमारे अंदर चैन नहीं हो, अंदर से इस बात की चिंता हो।

संकल्प शक्ति से जैसा चाहे वैसा भाग्य बना सकते हैं

दादी हृदयमोहिनी, अति.मुख्य प्रशासिका

अभी बाबा ने संकल्प शक्ति के ऊपर कितना स्पष्ट किया है यदि देखा जाए तो आधार तो सारा संकल्प के ऊपर ही है। चाहे हम बोलते हैं, चाहे हम कर्मणा करते हैं लेकिन पहले तो संकल्प ही चलता है ना। जैसा संकल्प हमारा चलता है वैसे मुख से बोल भी निकलते हैं। जैसी वृत्ति, दृष्टि होती है वैसे ही कर्म होता है। इसलिए बाबा कहते हैं कि संकल्प शक्ति सबसे बड़ी शक्ति है और अंत में यह संकल्प शक्ति ही हमारे काम आयेगी। यह साधन तो न थे, न रहेंगे। जब से स्थापना हुई तब से ही यह सब साधन निकले हैं।

यह सब साधन सेवा के लिए हैं, आगे बढ़ने के लिए निकले हैं लेकिन यह सदा थोड़े ही रहेंगे। अंत में भी हमको संकल्प शक्ति ही काम में आयेगी। टचिंग होनी चाहिए ना, यह टेलीफोन, फैक्स, यह कम्प्यूटर, ईमेल आदि क्या-क्या निकला है, यह सब हमारे संदेश पहुंचाने के लिए निकले हैं। यह सब साधन हमारे लिए ही निकले हैं, परन्तु साधना के बिना साधन बेकार है। साधन हम यूज करते हैं लेकिन साधन के वश होना और साधन को अपना निमित्त कार्य अर्थ यूज करना, फिर न्यारे हो जाना। वश नहीं होना। इसलिए बाबा ने आजकल संकल्प शक्ति पर बहुत अटेंशन दिलाया है। जितना मन और बुद्धि, आत्मा की लाइन क्लीयर होगी तो आपको ऐसे ही टचिंग होगी जैसे आपको कोई कुछ कह रहा है। जैसे अभी हम फोन में बात करते हैं तो जब लाइन क्लीयर होती है तभी फोन मिलता है, अगर लाइन क्लीयर नहीं होती है तो एक घण्टा भी आप हेलो हेलो करते रहो, कुछ आवाज ही नहीं आयेगा। और करेंट से ही लाइन क्लीयर होती है। पहले तो यह होना चाहिए कि संकल्प शक्ति जो हमारी है, जिससे हमारी मंसा सेवा अभी हो सकती है और लास्ट में भी यह मंसा संकल्प ही पास विद ऑनर बनने में मदद करेगा।यदि हमारी संकल्प शक्ति नाचती रहती है - कभी यहां, कभी वहां, फालतू में जाती रहती है तो हमें यह याद रखना चाहिए कि एक चित्र हमारा भी बना हुआ है। वृक्ष के नीचे एक योगी बैठा है, योग लगा रहा है और वृक्ष के ऊपर बंदर बैठे हैं वह इधर से उधर, उधर से इधर जम्प दे रहा है। उस चित्र में दिखाया हुआ है कि मन भी ऐसे बंदर के समान एक डाली से दूसरी डाली, दूसरी से तीसरी डाली ऐसे घूमता रहता है, जम्प लगाता है। संकल्प शक्ति एक सेकण्ड में कहां तक पहुंच सकती है, यह तो सबको अनुभव है, वैसे आप कहां नहीं भी पहुंच सको लेकिन संकल्प से तो पहुंच ही सकते हो। बाबा ने हम सबको यही अटेंशन दिलवाया है कि संकल्प शक्ति पर अटेंशन रखो। संकल्प शक्ति सभी के पास है, लेकिन हम यूज कहां करते हैं। अगर शुभ तरफ यूज करते हैं तो वह जमा होती है और व्यर्थ में करते हैं, तो न अच्छा न बुरा और बुरे संकल्प करते हैं तो अपनी शक्ति गंवाते हैं। जैसे स्थूल धन शक्ति है वैसे ही संकल्प भी एक शक्ति है। धन अगर अच्छी तरह से किसको यूज करना आता है तो मौज मनाता है और धन अगर ऐसे ही बैंक में पड़ा है, और वह ऐसे ही मर जाता है तो फालतू। और गंवाता है तो नुकसान होता है, ऐसे ही यह संकल्प शक्ति सबसे बड़ा खजाना है इससे हम जो चाहें अपना भविष्य बना सकते हैं, जमा कर सकते हैं। और संकल्प शक्ति के ऊपर अगर आपका कंट्रोल है तो समझो सब शक्तियों के उपर कंट्रोल है। तो मूल आधार संकल्प है। बाबा कहते हैं उसको जमा करो। स्थूल धन को जमा करने की कितनी कोशिश करते हैं। स्थूल धन को बचाने का हमको ध्यान रहता है लेकिन वह भी संकल्प अगर मेरा ठीक है तो कमा सकते हैं। अगर संकल्प शक्ति हमारी नीचे-ऊपर है तो कमाई भी नहीं कर सकते हैं। कोई लखपति और कोई कखपति बन जाता है, कारण क्या होता है। संकल्प शक्ति कमजोर होने के कारण निर्णय शक्ति नहीं, और निर्णय शक्ति न होने के कारण हाँ के बजाए ना किया तो गया। इसीलिए यह बाबा रोज कहता है अपना चार्ट जरूर देखो।